शुक्रवार, 31 मार्च 2017

लोकमत समाचार

जनता से सार्थक संवाद हो

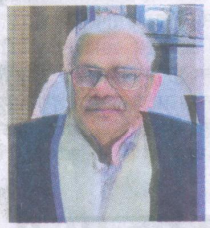

गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
misragirishwar@gmail.com

अपनी जनसंख्या, गरीबी, अशिक्षा और औद्योगिक पिछड़ेपन के लिए प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश ने देश के लिए सबसे ज्यादा प्रधानमंत्री भी दिए हैं. वहां बड़े-बड़े कद्दावर नेता हुए हैं और शिक्षा के बड़े केंद्र भी रहे हैं. वहां से देश की राजनीति में परिवर्तन का आगाज भी होता रहा है. उत्तर प्रदेश में सत्ता का परिवर्तन कुछ ऐसे ही संकेत देने वाले हैं.

उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव परिणाम मोदी-नेतृत्व की नीतियों और जनता में उनकी बढ़ती अपील को भी दिखाते हैं. यह चुनाव परिणाम बता रहा है कि जनता ने बिना शक नोटबंदी, गरीब की स्थिति सुधारने और देश की चिंता को लेकर नरेंद्र मोदी की कोशिश को स्वीकार किया और सभी आलोचनाओं को खारिज करते हुए अपार समर्थन दिया. उत्तर प्रदेश की जनता का चुनावी निर्णय जाति, धर्म और क्षेत्र से अधिक लोकतांत्रिक आकांक्षा को आकार देता दिख रहा है. उसका यह विवेक पिछले कुछ दशकों में हुए राजनीतिक अनुभव से विकसित हुआ. इस अवधि में उत्तर प्रदेश की जनता को जिस तरह के शासन के अनुभव से गुजरने को अवसर मिला वह किसी त्रासदी से कम न था. अखिलेश यादव के युवा नेतृत्व पर उसने भरोसा किया था और साफ-सुथरे और जनोन्मुख शासन को पाने की आशा संजोई, किंतु जनता ने देखा और महसूस किया कि शासन के सरोकार और जनता की चिंता के बीच का रिश्ता कमजोर होता गया. शासन का अर्थ सत्ता में जनता की भागीदारी के बदले बड़े ही संकुचित और सीमित दृष्टि से चुनिंदा लोगों के हितों को साधने वाली एक कुंजी के रूप में लिया जाने लगा. व्यापक जनाधार के बदले सीमित वोट बैंक पर केंद्रित शासन कुछ इस डगर पर चला कि उसमें व्यापक समाज ही हाशिए पर चला गया. आम जन गौण होता गया और निजी लाभ, परिवार तथा अपने समुदाय को लाभ पहुंचाने को तरजीह दी जाने लगी. नेता की जाति और बिरादरी के लिए सत्ता सुख का उपभोग सुरक्षित कर दिया गया. पर परिवार में ही नेतृत्व को लेकर पिता, चाचा, भतीजा, बहू की आपसी तकरार जिस ढंग से सार्वजनिक रूप से प्रकट हुई और लम्बे समय तक चर्चित रही. जिन मुद्दों पर ध्यान दिया भी गया, वे सतही थे. जनता की सतत उपेक्षा और लाभ की बंदरबांट ने नेतृत्व के प्रति अविश्वास पैदा किया और नीतियों के पालन में भेदभाव ने सामाजिक जीवन में व्यापक असंतोष को जन्म दिया. नेतृत्व की सामाजिक प्रतिबद्धता और ईमानदारी शक के घेरे में आ गई.

इस बार का चुनाव प्रचार अद्भुत था. आरोप-प्रत्यारोप का जो सिलसिला चला, वह शर्म-हया की सारी सीमाओं को तोड़ता चला गया. भाजपा को नोट बंदी के सहारे खूब घेरा गया पर जनता के मन में इस पहल की ईमानदारी के बारे में कोई शक नहीं था. उसे लगा कि कालेधन पर यह एक बड़ी चोट है और कष्ट सह कर भी सरकार का साथ दिया. इस चुनाव ने दिखा दिया कि देश ही सबसे ऊपर है और देश के लिए वही नेता स्वीकार्य होगा जो देश और उसके पूरे समाज को देख सकेगा. उसे जनता के सपनों के करीब होना चाहिए और जनता के साथ सार्थक संवाद स्थापित करना चाहिए.